IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समाजवादी विचारधारा का शिक्षा पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

हवाई सिंह गोठवाल

सहायक आचार्य समाजशास्त्र

राजकीय कन्या महाविद्यालय

गुड़ा, नीमकाथाना, राजस्थान

शोध सारांश

आज विश्व में समाजवादी व्यवस्था करने कि दिन प्रतिदिन मांग बढ़ती जा रही है। भारत ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद घोषित किया कि उसका अन्तिम लक्ष्य देश में समाजवादी समाज कि स्थापना करना है। ऐसे समाज कि विशेषताएं है असमानता कि भावना का अभाव, स्वस्थ, और सुखी जीवन व्यतीत करने के समान अवसर, शारीरिक और आर्थिक सुरक्षा आदि। इसका अर्थ है हमारे समाज का एक नई दिशा में रूप परिवर्तन और यह परिवर्तन शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है। समाजवाद ने वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की बुराइयों तथा असमानताओं कि ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। साथ ही सभी सहृदय व्यक्तियों में इन. बुराइयों को दूर करने कि इच्छा उत्पन्न कि है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि समाजवादी व्यवस्था कि स्थापना के लिये शिक्षा ही एक सबल साधन है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा, व्यक्तियों मे समाजवाद कि भावना का विकास करके उसे स्थायी रूप प्रदान करे। इस उद्देश्य को पूर्ण करके ही शिक्षा आधुनिक समाज को समाजवादी समाज कि ओर ले जा सकता है। नेहरू जी ने कहा था कि मे समाजवादी राज्य में विश्वास करता हूँ तथा शिक्षा का उद्देश्य इस प्रकार के राज्य का विकास करना होना चाहिये।

शब्द कुजी :– समाजवादी, विचारधारा, शिक्षा, अनुशासन, आर्थिक, नैतिक।

प्रस्तावना

समाज के सभी लोग अपने पारम्परिक सहयोग द्वारा एक दूसरे के लिए पूर्ण और स्वतन्त्र जीवन कि सम्भावनाओं का निर्माण करें। समाजवाद एक ऐसे आदर्श को प्रस्तुत करता है जिसमें गुण का परिभाग से तथा भावना को संचय से अधिक महान माना गया है। समाजवादी विचार के अनुसार एक व्यक्ति आर्थिक रूप से चाहे जितना बड़ा क्यों न हो, पर यदि उसमें सामाजिक जीवन के प्रति स्वाभाविक प्रकृति न हो तो ऐसा व्यक्तित्व पशुत्व है। दूसरी और समाज के साथ जीकर यदि कोई व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से कम सम्पन्नता का जीवन जी लेता है तो भी गुणात्मक भावना के कारण ऐसा जीवन उपादेय है। समाज एक ऐसी व्यवस्था का दावा है, जिसमें व्यक्ति समाज में दूसरे के साथ इसलिये सहयोग करेगा जिससे वह जीवन के संघर्ष से अधिकाधिक बच सके और उन कार्यों को कर सक जो अपने आप में करने योग्य है। समाजवादियों के अनुसार समाज मानव जाति का ऐसा समुदाय है जिसका निर्माण इस उद्देश्य से किया गया है कि उसके सदस्यों को उत्तम जीवन व्यतीत करने और अपनी इच्छाओं को पूरा करने का अवसर प्रदान किया जा सके। समाजवाद कि आन्तरिक भावना ही यह है कि लोग समाज के हित के लिये प्रसन्नता के साथ अधिक श्रम और त्याग करने के लिए उद्यत होते हैं, और यदि ऐसा मान लिया जाये कि व्यक्ति अपनी प्रकृति और स्वेच्छा से सामाजिक कल्याण नहीं कर सकता तो समाजवाद का सैद्धान्तिक आधार ही समाप्त हो जाता है, समाजवाद का यही औचित्य और यही महत्व कहा जा सकता है।

शोध विधि व आंकड़ों का संग्रहण

समाजवादी विचारधारा का शिक्षा पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन का विश्लेषण करने के लिए द्वितीयक आंकडों का संग्रहण किया गया है। आंकडों को विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इन्टरनेट आदि से इकट्टा किया गया है।

अध्ययन के उदेद्श्य

इस सामाजिक शोध पत्र का उद्देश्य समाजवादी विचारधारा का शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

1. समाजवादी विचारधारा का अध्ययन करना।
2. समाजवादी विचारधारा का शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. भारतीय शिक्षा और समाजवादी प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

समाजवाद व शिक्षा के उद्देश्य

समाजवाद समानता पर अधिक बल देता है। इस कारण समाजवादी शिक्षा का उद्देश्य है ऐसे नागरिकों का निर्माण जो आर्थिक एवं सामाजिक समानता के समर्थक हो। ऐसे नागरिकों का निर्माण तभी सम्भव है जब शिक्षा प्राप्त करने के अवसर में समानता होगी। शिक्षा आयोग ने इस सम्बंध में लिखा है कि शिक्षा का एक महत्वपूर्ण सामाजिक उद्देश्य है– शिक्षा प्रकट करने के अवसरों में समानता स्थापित करना, जिससे की पिछड़े हुये या कम विशेषाधिकार वाले वर्ग और व्यक्ति शिक्षा को अपनी दशा सुधारने के लिए साधन के रूप में कम कर सके। समाजवादी शिक्षा के उद्देश्य के सम्बंध में प. जवाहर लाल नेहरू ने अपने विचार व्यक्त करते हुये लिखा है कि धर्म भाषा, जाति, प्रान्तों, के नाम में जो संकीर्ण संघर्ष आज चल रहा है समाप्त होना चाहिये ताकि वर्ग विहीन समाज का निर्माण को जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुण और योग्यता के अनुसार उन्नति करने का पूरा अवसर मिल सके। जवाहर लाल नेहरू ने अपने वक्तव्य में आशा व्यक्त कि है कि यदि वर्ग संघर्ष समाप्त हो जाता है तो जाति का अभिशाप भी समाप्त हो जायेगा क्योंकि जाति लोकतंत्र व समाजवाद का आदर नहीं हो सकती।

प्रसिद्ध शिक्षाविद् ज्ञान ड्यूवी भी समाजवाद को सामाजिक कुशलता के रूप में लेते है, इनका मानना है कि शिक्षा द्वारा अधिक से अधिक सामाजिक कुशलता विकसित कि जा सके। जॉन ड्यूवी के अनुसार विद्यालय को सामाजिक जीवन का अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व करना चाहिये। इनके अनुसार समाज कुशलता मे मनम्नलिखित उद्देश्य है

- सभा
- स्वास्थ्य
- मौलिक क्रियाओं को आज्ञा देना
- परिवार कि योग्य सदस्यता
- अवकाश का उचित उपयोग
- नैतिक चरित्र

समाजवाद और पाठ्यक्रम– समाजवादी व्यवस्था में पाठ्यक्रम की क्षमताओं प्रवृतियों तथा रुचियों पर आधारित होना चाहिये जिससे व्यक्ति अपना पूर्ण विकास कर सके। यह पाठ्यक्रम लिंग भेद पर आधारित नहीं होनी चाहिये। शिक्षा आयोग ने इस सम्बंध में लिखा है– समाजवादी समाज में जिसकी हम कल्पना करते है, शिक्षा व्यक्ति की उन क्षमताओं, अभिवृत्तियों तथा रुचियों से संबन्धित न हो। समाजवादी शिक्षा के पाठ्यक्रम मे विभिन्न सामाजिक विषयों, विज्ञानों, क्रियार्यों तथा व्यवसाओं को संस्थान प्रदान किया जाये।

समाजवाद तथा शिक्षण विधियाँ– समाजवादी व्यवस्था में एसी शिक्षण विधियों को स्थान प्राप्त होता है, जिससे बालक स्वतंत्रता पूर्वक सामूहिक रूप से जान अर्जित कर सके। समाजवादी शिक्षा में सम्मेलन वर्कशॉप (कार्यशाला) सेमीनार सामूहिक शिक्षा दलीय शिक्षण आदि पर बल दिया जाता है। समाजवादी शिक्षा के बालक के स्वतंत्रता को ध्यान में रख कर अनुभव दद्वारा सीखने या स्वयं क्रिया करके सीखने पर बल दिया जाता है।

समाजवाद व शिक्षा– समाजवादी व्यवस्था में शिक्षा का कार्य बड़ा ही कठिन है उसके विचार एवं कार्यों पर ही समाजवादी आन्दोलन की सफलता निर्भर है। महान समाजवादी आचार्य नरेन्द्र देव का कहना है कि श्समाजवादी आन्दोलन को ऐसे विद्या चरण सम्पन्न कार्यकर्ताओं कि आवश्यकता है जो समाज को अपने जीवन का लक्ष्य बनाने को तैयार हो। जो अपने जीवन को जनता के जीवन में आत्मसात करने को उद्‌घड हो और जो निष्काम सेवा के द्वारा प्राप्त उन्नयन व उत्साह को ही उसका समुचित पुरस्कार समझे। प्रत्येक शिक्षक अपने जीवन में जान पिपासा, सत्य कि आराधना, मौलिक सिद्धांतों का स्पष्ट जान, नवीन संस्कृति और नये समाज में निष्ठा, चरित्र कि दृढ़ता तथा कम कि लगन आदि गुणों का पोषण करें।

समाजवाद व अनुशासन– समाजवादी दमनतमक अनुशासन के पक्ष में नहीं है। वे बालक को ऐसे वातावरण में रखना चाहते है जिसमें रहकर वो सहयोग, सामाजिक प्रबन्ध कि क्षमता स्वशासन कि भावना आदि गुर्गों को प्राप्त कर सकें। इस प्रकार का अनुशासन बनाने के सम्बंध में आचार्य नरेंद्र देव का मत है कि श्विद्यालयों में क्षेत्रों स्वशासन संस्थायें स्थापित कि जाये जिनके माध्यम से क्षेत्रों कि स्वशासन संस्थायें स्थापित के जाये जिनके माध्यम से क्षेत्रों में स्वशासन भावना को पुष्ट किया जाये और उनमें सामाजिक प्रबन्ध कि क्षमता पैदा कि जाये।

समाजवादी शिक्षा कि प्रमुख विशेषताएं

- ❖ जनसाधारण कि शिक्षा कि व्यवस्था अर्थात शिक्षा सबकी लिये स्वरूप अपनाना।
- ❖ व्यावसायिक व व्यावहारिक शिक्षा पर बल।
- ❖ समाजवादी विचारधारा का व्यापक प्रभाव
- ❖ शिक्षा द्वारा व्यक्ति को सफल सामाजिक जीवन के लिये तैयार करना।
- ❖ शिक्षा द्वारा व्यक्तिवादी प्रवृति का विरोध।
- ❖ सामाजिक गुणों का विकास करना।
- ❖ शिक्षा सामाजिक नियंत्रण परिवर्तन और प्रगति का साधन बने।
- ❖ पाठ्यक्रम में सामाजिक विषयों का महत्व।
- ❖ प्रजातन्त्र में विकास।

समाजवादी विचारधारा का प्रभाव

शिक्षा के विभिन्न कि क्षेत्रों में समाजवादी विचारधारा का व्यापक प्रभाव पड़ा है। लोक हित शिक्षा आन्दोलन समाजवादी विचारधारा के फलस्वरूप लोकहित शिक्षा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ लोकहित और शिक्षा प्रसार कि भावना से उत्प्रेरित होकर सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा बालक को शिक्षित करने के लिये स्कूल खोले गये। ऐसे स्कूलों को प्रारम्भ करने का श्रेय बेसेडों को है। सन् 1717 में उसने देसो के शासक लियोपोल्ड से अनुदान के रूप में आर्थिक सहायता लेकर "फिलान्ग्रोपिनम" नाम से एक विद्यालय खोला। यह विद्यालय बहुत लोकप्रिय हुआ। फलस्वरूप इंग्लैण्ड में चेरिटी तथा सनडे स्कूल खोले गये। इन स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा, मुफ्त पुस्तकं तथा भोजन तथा वस्त्र आदि कि सुविधा प्रदान कि गई।

शिशु शिक्षा– शिशु शिक्षा आन्दोलन को भी इस विचारधारा के द्वारा बल मिला। फलस्वरूप अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस आदि देशों में शिशु विद्यालय खोलने गये। इन विद्यालयों के प्रारम्भ करने का श्रेय रोबर्ट ओवन को है। सन् 1799 में इंग्लैण्ड में इस प्रकार के विद्यालय कि स्थापना कि। जिनमें कि। जिनमें उसे 2 वर्ष के बालकों को शिक्षा दी जाती थी। औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप, स्त्री–पुरुष के साथ–साथ बालकों को भी काम करना पड़ता था। जिससे वह अशिक्षित रह जाते थे। इन विद्यालयों में श्रमिकों के बालकों को सहज शिक्षा मिलने लगी। इसमें प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में अत्याधिक सहायता मिली।

व्यावसायिक शिक्षा– की व्यवस्थाः यह सिद्धांत, व्यक्ति तथा समाज कि प्रगति में अपना योगदान दे सकता है जब वह स्वावलम्बी हो और उसमें जीवकोपार्जन कि क्षमता हो। अतः जीवकोपार्जन कि क्षमता विकसित करने के लिये विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक विद्यालय खोले गये।

पिछड़े बालों कि शिक्षा– समाजवादी विचारधारा कि प्रवृत्ति के फलस्वरूप अन्धे गूंगे बहरे आदि सभी प्रकार के बालकों कि शिक्षा का प्रसार हुआ।

शिक्षा राज्य का उत्तरदायित्व– शिक्षा राज्य का कर्तव्य माना जाने लगा। परिणामस्वरूप राजकीय विद्यालयों कि स्थापना हुई। सर्व प्रथम जर्मनी ने अपनी जनता को शिक्षित करने के लिए राजकीय विद्यालय खोले। उसके बाद फ्रांस, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि अन्य देशों ने भी शिक्षा को राज्य का उत्तरदायित्व स्वीकारा। भारत में भी स्वतंत्रता के पश्चात् संविधान में प्राथमिक स्तर कि शिक्षा को अनिवार्य घोषित कर इसी भावना को मूर्त रूप प्रदान किया है।

मॉनीटर शिक्षा प्रणाली– मानीटर शिक्षा प्रणाली का स्वरूप भी इसी विचारधारा वादी लोगों कि देन है। इसमें एक अध्यापक विद्यालय में होता है तथा विद्यालय के छोटे बालकों को पढ़ाने का दायित्व बड़े बालों पर होता है।

भारतीय शिक्षा और समाजवादी प्रवृत्ति

भारतीय शिक्षा और समाजवादी प्रवृत्ति के उद्देश्य स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हमारे देश हमें तीन शिक्षा आयोगों ने (विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग 1949; माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53 तथा राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1966) गठित हुये। इन्होंने हमारी संस्कृति एवं सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर शिक्षा के उद्देश्यों को बताया है।

1. **आर्थिक विकास :** भारत के भावी नागरिकों कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे वे समाज के उत्पादक अंग बन सके। राष्ट्र कि आर्थिक विषमता को दूर कर सकें। राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि कर सकें, शिक्षा प्राप्ति के पश्चात जीवीकोपार्जन कर सके।
2. **लोकतन्त्र को दृढ़ करना :** भावी नागरिकों को लोकतान्त्रिक नागरिकता के लिये तैयार करना आवश्यक है। प्रत्येक छात्र को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत होना चाहिये, जिससे वह लोकतन्त्र को दृढ़ कर सकें। लोकतंत्र के लिये यह भी आवश्यक है कि योग्य नेतृत्व का विकास हो सके।
3. **नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का विकास :** राष्ट्र कि उन्नति के लिये आवश्यक है कि नागरिकों का नैतिक जीवन उच्च हो तथा भौतिकवाद के साथ आध्यात्मिक मूल्यों का समन्वय हो सके।
4. **राष्ट्रीय तथा भावात्मक एकता :** हमारा देश विविधताओं का देश है यहां अनेक प्रजातियां, धर्म तथा संस्कृतियों के लोग रहते हैं। हमारा देश बहुभाषी भी है। शिक्षा द्वारा ऐसे व्यक्ति उत्पन्न होना चाहिये जो इन विभेदों के बीच एकता का अनुभव कर सके तथा उद्घाव से रह सकें। इसके अतिरिक्त विश्व कि संस्कृतियों के साथ भी हमारा आदान प्रदान होता रहे तथा छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव का विकास हो।

निष्कर्ष :

समाजवाद तथा समाजवादी विचारक शिक्षा को समाज उत्थान कि दृष्टि से देखते हैं। इनका प्रमुख उद्देश्य समाज का विकास करना होता है। और इस कारण वह सम्पूर्ण शिक्षा को सामाजिक विकास के लिये व्यवस्थित करते है। प्रत्येक समाज जो सामाजिक न्याय को महत्व देता है और सामान्य मनुष्य की दशा में सुधार करने तथा सभी उपलब्ध योग्यताओं का विकास करने का इच्छुक है, को जनता के सब वर्गों के लिए समानता के अवसर में निरंतर वृद्धि को सुरक्षित करना आवश्यक है। क्योंकि केवल समानता पर आधारित मानव समाज के निर्माण के द्वारा ही निर्बल के शोषण को कम किया जा सकता है। समाजवाद का उद्देश्य व्यक्तिगत हित के स्थान पर सामाजिक सेवा को स्थानापन्न करना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. वीरेन्द्र शर्मा : आधुनिक राजनीतिक विचारधारायें, रस्तोगी पब्लिकेशन. शिवाजी रोड, मेरठ।
2. डॉ. गिरीश पचौरी : शिक्षा सिद्धांत, लायल बुक डिपो, मेरठ।
3. डॉ. के. एन. वर्मा : पाश्चात्य राजनीति विचारधारायें, भाग 2, रस्तोगी पब्लिकेशन. शिक्षा साहित्य प्रकाशन, शिवाजी रोड, मेरठ।
4. डॉ. एल. के. ओड : शिक्षा कि समाजशास्त्रीय और दार्शनिक पीठिका. मैकमिलन एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।
5. पी.डी पाठक : भारत में शिक्षा दर्शन और शैक्षिक समस्यायें, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. शर्मा, रा.ना.व शर्मा रा.कु. शैक्षिक समाजशास्त्र, एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली।